हिमाचल प्रदेश में जलवायु-परिवर्तन तथा ग्लोबल वार्मिंग के संकेतक

- हिमालय में घटता हुआ हिमपात।
- सिकुड़ते हिमनद तथा सूखते सदाबहार जल स्रोत।
- शीतोष्ण फलों का और ऊंचाई में फलना।
- सेब की उपज में गिरावट।
- रबी की फसल के समय में बदलाव।
- वर्षा के स्वरूप व अवधि में बदलाव।
- कीट रोगजनकों के आक्रमण में बढ़ोतरी।
- सघन वनों तथा उनकी विविधता का घटना व उत्पादन क्षमता में गिरावट।

हिमाचल प्रदेश में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव

- सन् 1991–2003 से 13 वर्षों के दौरान राज्य के विभिन्न भागों में लगभग 40 बार बादलों का फटना और भयंकर बाढ़ आना।
- राज्य में देवदार, कैल, शीशम, बुरांश और बान जैसे वृक्षों की उपज में कमी।
- अनियमित व कम बारिश के कारण खरीफ की फसलों–मक्का, धान और दालों की उपज में उतार–चढ़ाव दर्ज की गई।
- पानी की कमी के कारण धान की खेती के इलाकों में मक्का उगाया जा रहा है।
- औसत तापमान में परिवर्तन (1991–95 में 19.8 डिग्री से लेकर 2001–04 में 21.6 डिग्री सेंटीग्रट तक) के कारण अधिक ऊंचाई के क्षेत्रों में सेब का उत्पादन।
- ग्लोबल वार्मिंग के कारण सेब की फसल में उर्वरता तथा फल धारण क्षमता का ह्रास, फल के आकार एवं स्वाद में कमी, फीका रंग, जल्दी सड़ना तथा कीटों का सेब की फसल पर लगातार हमला आदि।
- सर्दी की बरसात के अनियमित व्यवहार के फलस्वरूप सेब, आलू बुखारा, खुमानी और नाशपाती बागानों की उत्पादकता में भारी कमी।
- हिमाचल में सतलुज घाटी में अचानक भयंकर बाढ़ आने से लगभग 800 करोड़ रूपयों का नुकसान हुआ।
- नदी प्रणाली में असमय बाढ़ों तथा पानी के बढ़ते बहाव के कारण उसमें भरने वाली गाद का स्तर निर्धारित सीमा लांघ चुका है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

निदेशक एवं राज्य नोडल अधिकारी,
हिमाचल प्रदेश जलवायु परिवर्तन ज्ञान प्रकोष्ठ,
पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार
पर्यावरण भवन, शिमला, हिमाचल प्रदेश–171001
दूरभाषः 0177–2656559, 2659608 फैक्सः 0177–2659609
ई–मेलः s.attrigohp@gmail.com

सत्यमेव जयते

जलवायु-परिवर्तन चुनौती या अवसर !

आईए अपनी विविध-जैव-सम्पदा को बचाएं

हिमालयी पारिस्थितिकीतंत्र संभालने हेतु राष्ट्रीय मिशन
(National Mission on Sustaining Himalayan Ecosystem)
के अन्तर्गत अग्रसर

हिमाचल प्रदेश जलवायु परिवर्तन ज्ञान प्रकोष्ठ
हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र पर राष्ट्रीय मिशन के अन्तर्गत
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा स्थापित

पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
हिमाचल प्रदेश सरकार

जलवायु परिवर्तन

तापमान में वृद्धि, वर्षा का समय पर न होना जलवायु परिवर्तन के संकेतक हैं। हमें जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले खतरों से सचेत रहने के लिए तैयार रहना चाहिए।

हमें ऐसी परिस्थिति का सामना क्यों करना पड़ रहा है? क्या ये आने वाले विनाश की ओर एक इशारा है? क्या इस परिवर्तन के लिए मानव जाति जिम्मेदार हैं? क्या हम इसके बारे में कुछ कर सकते हैं?

अनेक वैज्ञानिक अध्ययनों के पश्चात् यह तथ्य सामने आया है कि जलवायु परिवर्तन बहुत तेजी से हो रहा है और गत 100 वर्षों में तीव्र से तीव्रतम होता जा रहा है। बदलते मौसम में यह तीव्रता सम्पूर्ण विश्व या धरती के भौतिक व जैवीय तत्वों को गंभीर रूप से प्रभावित कर रही है।

क्या आप जानते हैं? कार्बन संतुलन की परिकल्पना

कार्बन उत्सर्जन तब होता है जब ईंधन को जलाया जाता है, जब वनों को काट दिया जाता है या अनुचित तथा पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले तरीके से खेती की जाती है तो इससे जलवायु परिवर्तन की समस्या का सामना करना पड़ता है।

कार्बन अधिग्रहण (कार्बन को उत्सर्जन से रोकना) की प्रक्रिया ज्यादा से ज्यादा वन तथा पेड़ लगाने से पूरी होती है। इसके अतिरिक्त वनों को काटने से रोककर भी कार्बन उत्सर्जन को रोका जा सकता है।

कार्बन असंतुलन को निम्नलिखित समीकरण से समझा जा सकता है।

कार्बन उत्सर्जन = कार्बन अधिग्रहण
या
कार्बन उत्सर्जन – कार्बन अधिग्रहण = (कार्बन संतुलन)

जलवायु परिवर्तन के कारण

प्राकृतिक कारण:

- वायुमण्डल में प्रवेश करने वाले सौर विकिरण में होने वाली विविधता।
- समुद्री प्रवाहों में होने वाले परिवर्तन और ज्वालामुखी में होने वाले विस्फोट।

मानवीय कारण

- जंगलों का अत्यधिक कटान।
- खनिज ईंधन का अधिक प्रयोग।
- कृषि पद्धतियां।
- आधुनिक जीवन शैली।

क्या आप जानते हैं?

कार्बन पदचिन्ह की परिकल्पना: मानव के कार्य–कलापों का कार्बन उत्सर्जन के रूप में पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव को कार्बन पदचिन्ह कहते हैं। सरल शब्दों में इसका अर्थ है कि कोई भी ऐसी गतिविधि जो कार्बन उत्सर्जित करती है वे कार्बन पदचिन्ह कहलाती है। इन कार्बन पदचिन्हों को मानव गतिविधियों द्वारा टनों या किलोग्राम में उत्सर्जित कार्बन डायक्साइड में नापा जाता है।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव

- कृषि–उत्पादन एवं गुणवत्ता में गिरावट।
- जल–संसाधनों में कमी।
- जल स्तर का बढ़ना।
- ग्लेशियरों–हिमनदों का तीव्रता से पिघलना।
- स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव–वायु तथा जल प्रदूषण के कारण बीमारियों का फैलना।
- जैव संसाधनों का लुप्त होना।
- अनवरत आपदाएं: – बादल फटना, बाढ़ आना, भू–स्खलन, सूखा, हिमनद झीलों का बनना।